चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20.03.25	3	3-5

दैनिक भास्कर

मृदाओं में सूक्ष्म, गौण पोषक तत्वों पर तैयार एटलस को मिला कॉपीराइट

सूक्ष्म, गौण पोषक तत्व की स्थिति को मानचित्र पर भिन्नताओं के साथ अलग-अलग श्रेणियां में दर्शाया

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विवि (हकृवि) के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने हरियाणा की मृदाओं में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तर एटलस प्रकाशित किया है। इसको लेकर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट इंडिया ने साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया है। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी, पौधों में सूक्ष्म, माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम जीपीएस का उपयोग कर यह एटलस तैयार किया गया है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इस एटलस में हर सूक्ष्म और गौण पोषक तत्व की उपलब्धता स्थिति को ताल्लुकवार मानचित्र पर अलग-अलग रंग भिन्नताओं के साथ अलग-अलग श्रेणियां में दिखाए जाने से उन क्षेत्रों के बेहतर दृश्यांकन में मदद मिलेगी। जिन पर किसी तत्व विशेष की कमी के कारण अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रकाशन में इन वैज्ञानिकों का रहा महत्वपूर्ण योगदान

वैज्ञानिकों की टीम के साथ हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

इस एटलस को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर (आईएसबीएन) व विवि प्रकाशन नंबर यूपीएन के साथ प्रकाशित करने के लिए एचएयू की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पीएस संगवान, डॉ. आरएस मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. बीआर काम्बोज तथा भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल से प्रोफेसर अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी एवं डॉ. एसपी दत्ता का प्रमुख योगदान रहा।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20.03.25	3	3-5

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए एटलस को मिला कॉपीराइट

हिसार, 19 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जी.पी.एस.) का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओ में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का तागुकवार स्तर: एटलस शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस एटलस के प्रकाशन के लिए शोधकर्ताओं की पूरी टीम की प्रशंसा की और भविष्य में इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है।

कृषि में अधिकतम उत्पादकता के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायन तथा असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग में मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला है। जिसके परिणाम स्वरुप मिट्टी में प्रमुख पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की सांद्रता में काफी कमी हो गई है। जिसने कृषि उत्पादकता के साथ-साथ उपज की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। सीमित प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की मांग को पूरा करना एक प्रमुख वैश्विक चिंता बनी हुई है।

उन्होंने बताया कि इस एटलस के प्रशासन से हरियाणा के सभी जिलों में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा तथा एटलस में दी गई जानकारी शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, विस्तार शिक्षा अधिकारियों, नीति निर्माता, कृषक समुदाय, छात्रों और अन्य हित धारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इस एटलस को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर व विश्वविद्यालय प्रकाशन नंबर के साथ प्रकाशित करने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पी.एस. संगवान, डॉ आर.एस. मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. बी.आर. काम्बोज तथा भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल की ओर से प्रोफेसर अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी एवं डॉ. एसपी दत्त का प्रमुख योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	20.03.25	12	1-4

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने टीम को दी बधाई

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए एटलस को मिला कॉपीराइट

- इस एटलस के प्रशासन से हरियाणा के सभी जिलों में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा

फोटो: हरिभूमि

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओं में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तरः एटलस शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने इस एटलस के प्रकाशन के लिए शोधकर्ताओं की पूरी टीम की प्रशंसा की और भविष्य में इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। संसार के समस्त जीवों का अस्तित्व और कल्याण मिट्टी के स्वास्थ्य से अभिभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। कुलपति ने बताया कि इस एटलस में प्रत्येक (सूक्ष्म और गौण) पोषक तत्व की उपलब्धता स्थिति को ताल्लुकवार मानचित्र पर अलग-अलग रंग भिन्नताओं के साथ अलग-अलग श्रेणियां में दिखाए जाने से उन क्षेत्रों के बेहतर दृश्यांकन में मदद मिलेगी, जिन पर किसी तत्व विशेष की कमी के कारण अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस एटलस के प्रशासन से हरियाणा के सभी जिलों में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा तथा एटलस में दी गई जानकारी शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, विस्तार शिक्षा अधिकारियों, नीति निर्माता, कृषक समुदाय, छात्रों और अन्य हित धारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

इनका रहा प्रमुख योगदान

इस एटलस को इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बुक नंबर आईएसबीएन) व विश्वविद्यालय प्रकाशन नंबर (यूपीएन) के साथ प्रकाशित करने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पीएस सांगवान, डॉ. आरएस मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. बीआर कम्बोज तथा भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल की ओर से प्रोफेसर अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी एवं डॉ. एसपी दत्ता का प्रमुख योगदान रहा। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा व कार्यवाहक विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	20.03.25	3	6-7

हकृवि के विज्ञानियों को साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत मिला कापीराइट

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ मौजूद • पीआरओ

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के विज्ञानियों की टीम को रजिस्ट्रार आफ कापीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कापीराइट प्रदान किया गया है। यह कापीराइट मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक व प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पाजिशनिंग सिस्टम का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओं में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तर : शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर मिला है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। संसार के समस्त जीवों का अस्तित्व और कल्याण मिट्टी के स्वास्थ्य से अभिभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। कृषि में अधिकतम उत्पादकता के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायन तथा असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग में मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला है। जिसके परिणाम स्वरूप मिट्टी में प्रमुख पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की सांद्रता में काफी कमी हो गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	20.03.25	5	3-5

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए एटलस को मिला कॉपीराइट

हिसार, 19 मार्च (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओ में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तर- एटलस शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस एटलस के प्रकाशन के लिए शोधकर्ताओं की पूरी टीम की प्रशंसा की और भविष्य में इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। संसार के समस्त जीवों का अस्तित्व और कल्याण मिट्टी के स्वास्थ्य से अभिभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। कृषि में अधिकतम उत्पादकता के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायन तथा असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग में मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला है। जिसके परिणाम स्वरुप मिट्टी में प्रमुख पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की सांद्रता में काफी कमी हो गई है। जिसने कृषि उत्पादकता के साथ-साथ उपज की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। सीमित प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की मांग को पूरा करना एक प्रमुख वैश्विक चिंता बनी हुई है।

उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की कमी ने वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और अन्य किसान हितधारकों का ध्यान उनके प्रबंधन की ओर आकर्षित किया है। गुणवत्ता युक्त फसल उत्पादन तथा औसत तत्वों के उचित प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र की पहचान हेतु हरियाणा राज्य की मिट्टी में ब्लॉक स्तर पर सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों के पर्याप्त या कमी वाले क्षेत्र की पहचान कर उनका एटलस के माध्यम से चित्रण करना बहुत महत्वपूर्ण व सराहनीय कार्य है। इस एटलस में प्रत्येक (सूक्ष्म और गौण) पोषक तत्व की उपलब्धता स्थिति को ताल्लुकवार मानचित्र पर अलग-अलग रंग भिन्नताओं के साथ अलग-अलग श्रेणियां में दिखाए जाने से उन क्षेत्रों के बेहतर दृश्यांकन में मदद मिलेगी, जिन पर किसी तत्व विशेष की कमी के कारण अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस एटलस के प्रशासन से हरियाणा के सभी जिलों में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा तथा एटलस में दी गई जानकारी शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, विस्तार शिक्षा अधिकारियों, नीति निर्माता, कृषक समुदाय, छात्रों और अन्य हित धारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20.03.25	2	1-6

उपलब्धि

मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म, पोषक-प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग कर तैयार की एटलस

एचएयू के वैज्ञानिकों के तैयार किए एटलस को मिला कॉपीराइट

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ। स्रोत : आयोजक

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मृदा विज्ञान विभाग और भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों ने 'हरियाणा राज्य की मृदाओं में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का तालुकावार एटलस तैयार किया है।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत मिट्टी, पौधों में सूक्ष्म, माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना के तहत बने इस एटलस में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग किया गया है।

इस एटलस को रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) ने साहित्यिक श्रेणी के तहत कॉपीराइट प्रदान किया है। एचएयू के कुलपति प्रो. कांबोज ने इस एटलस के प्रकाशन के लिए शोधकर्ताओं की पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने भविष्य में इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि कृषि में अधिकतम उत्पादकता के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायन और असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग ने मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला है। मिट्टी में प्रमुख पोषक तत्वों के साथ

हरियाणा की मृदा में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का उपमंडल स्तर का एटलस बनाया

सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की सांद्रता में काफी कमी हो गई है। इसने कृषि उत्पादकता के साथ उपज की गुणवत्ता को प्रभावित किया है।

हरियाणा राज्य की मिट्टी में ब्लॉकस्तर पर सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों के पर्याप्त या कमी वाले क्षेत्र की पहचान कर उनका एटलस के माध्यम से चित्रण किया गया है। एटलस में प्रत्येक (सूक्ष्म और गौण) पोषक तत्व की उपलब्धता स्थिति को तालुकावार मानचित्र पर अलग रंग की भिन्नताओं के साथ कई श्रेणियों में दिखाए जाने से उन क्षेत्रों के बेहतर दृश्यांकन में मदद मिलेगी, जिन पर किसी तत्व विशेष की कमी के कारण अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

एटलस को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर (आईएसबीएन) और विश्वविद्यालय प्रकाशन नंबर (यूपीएन) के साथ प्रकाशित करने के लिए एचएयू की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पीएस संगवान, डॉ. आरएस मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. कांबोज, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल की ओर से प्रो. अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी और डॉ. एसपी दत्ता का प्रमुख योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	19.03.25	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों के तैयार किए एटलस को मिला कॉपीराइट

एटलस से हरियाणा के सभी जिलों की मिट्टी में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओ में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तर-एटलस शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस एटलस के प्रकाशन के लिए शोधकर्ताओं की पूरी टीम की प्रशंसा की और भविष्य में इस कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। संसार के समस्त जीवों का अस्तित्व और कल्याण मिट्टी के स्वास्थ्य से अभिभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। कृषि में अधिकतम उत्पादकता के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायन तथा असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग में मिट्टी के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाला है। जिसके परिणाम स्वरुप मिट्टी में प्रमुख पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की सांद्रता में काफी कमी हो गई है। जिसने कृषि उत्पादकता के साथ-साथ उपज की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। सीमित प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की मांग को पूरा करना एक प्रमुख वैश्विक चिंता बनी हुई है।

उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों से सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की कमी ने वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और अन्य किसान हितधारकों का ध्यान उनके प्रबंधन की ओर आकर्षित किया है। गुणवत्ता युक्त फसल उत्पादन तथा औसत तत्वों के उचित प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र की पहचान हेतु हरियाणा राज्य की मिट्टी में ब्लॉक स्तर पर सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों के पर्याप्त या कमी वाले क्षेत्र की पहचान कर उनका एटलस के माध्यम से चित्रण करना बहुत महत्वपूर्ण व सराहनीय कार्य है। इस एटलस में प्रत्येक (सूक्ष्म और गौण) पोषक तत्व की उपलब्धता स्थिति को ताल्लुकवार मानचित्र पर अलग-अलग रंग भिन्नताओं के साथ अलग-अलग श्रेणियां में दिखाए जाने से उन क्षेत्रों के बेहतर दृश्यांकन में मदद मिलेगी, जिन पर किसी तत्व विशेष की कमी के कारण अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इस एटलस के प्रशासन से हरियाणा के सभी जिलों में सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की स्थिति का पता चलेगा तथा एटलस में दी गई जानकारी शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, विस्तार शिक्षा अधिकारियों, नीति निर्माता, कृषक समुदाय, छात्रों और अन्य हित धारकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा व कार्यवाहक विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर उपस्थित रहे।

एटलस के प्रकाशन में इन वैज्ञानिकों व अनुसंधान सहयोगियों का रहा योगदान

इस एटलस को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर (आईएसबीएन) व विश्वविद्यालय प्रकाशन नंबर (यूपीएन) के साथ प्रकाशित करने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पीएस संगवान, डॉ आर एस मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. बी.आर. काम्बोज तथा भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल की ओर से प्रोफेसर अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी एवं डॉ. एसपी दत्ता का प्रमुख योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	20.03.25	--	--

हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए एटलस को मिला कॉपीराइट

- कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने टीम को दी बधाई

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 19 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गए एटलट को कॉपी राइट मिला है। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति बीआर काम्बोज ने टीम को बधाई दी है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

मृदा विज्ञान विभाग व भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल के वैज्ञानिकों की टीम ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत मिट्टी और पौधों में सूक्ष्म और माध्यमिक पोषक तत्वों और प्रदूषक तत्वों की शोध परियोजना में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग करके 'हरियाणा राज्य की मृदाओ में सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों का ताल्लुकवार स्तर- एटलस शीर्षक के अंतर्गत एटलस प्रकाशित करने पर रजिस्ट्रार ऑफ कॉपीराइट (इंडिया) द्वारा साहित्यिक श्रेणी के अंतर्गत कॉपीराइट प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मिट्टी एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। संसार के समस्त जीवों का अस्तित्व और कल्याण मिट्टी के स्वास्थ्य से अभिभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से सूक्ष्म और गौण पोषक तत्वों की कमी ने वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और अन्य किसान हितधारकों का ध्यान उनके प्रबंधन की ओर आकर्षित किया है।

इस एटलस को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बुक नंबर (आईएसबीएन) व विश्वविद्यालय प्रकाशन नंबर (यूपीएन)के साथ प्रकाशित करने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. पीएस संगवान, डॉ आर एस मलिक, डॉ. हरेंद्र कुमार यादव, प्रो. बी.आर. काम्बोज तथा भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान भोपाल की ओर से प्रोफेसर अरविंद कुमार शुक्ला, डॉ. संजीव कुमार बेहेरा, डॉ. राहुल मिश्रा, विमल शुक्ला, योगेश सिकनिया, क्षितिज तिवारी एवं डॉ. एसपी दत्ता का प्रमुख योगदान रहा।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, एसवीसी कपिल अरोड़ा व कार्यवाहक विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश तोमर उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20.02.25	6	2-5

दैनिक भास्कर

दलहन फसल • मूंग में होती है पर्याप्त प्रोटीन, मिट्टी में नाइट्रोजन स्थापित कर उर्वरा शक्ति भी बढ़ाती है

10 अप्रैल तक कर लें मूंग की बिजाई, इसके बाद होगा नुकसान, दो महीने में फसल हो जाती है तैयार

सलाह

प्रो. बीआर कम्बोज
कुलपति, चौधरी चरण सिंह हरियाणा, कृषि विवि हिसार

दलहनी फसलों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। ये पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन देकर न केवल हमारे भोजन की गुणवत्ता बढ़ाती हैं, बल्कि वायुमंडल की नाइट्रोजन को भूमि में स्थापित कर उसकी उर्वरक शक्ति भी बढ़ाती है। इन फसलों को दूसरी फसलों की अपेक्षाकृत कम पानी एवं उर्वरकों की आवश्यकता होती है। उत्पादन में अधिक खर्च भी नहीं आता। मूंग की बिजाई का सही समय 15 मार्च से 10 अप्रैल है। कृषि विशेषज्ञ एमएच 421 किस्म उत्तम है। 15 अप्रैल से 20 जून के दौरान मूंग की बिजाई न करें, अन्यथा फसल में भारी नुकसान की आशंका है। प्रतिकूल मौसम, असामान्य भूमि पर काश्त, जैविक और अजैविक बाधाएं, उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीजों का अभाव, आदि दलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने में बड़ी रुकावट है। इनमें से उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज का प्रयोग करने से ही उत्पादन काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है।

बिजाई के लिए मध्यम दोमद मिट्टी ही उत्तम

अच्छे निकास वाली मध्यम दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है। खारी या सेम वाली भूमि में इनका उत्पादन कभी न लें। विभिन्न क्षेत्रों के लिए एवं विभिन्न जलवायु एवं फसल चक्र के लिए भिन्न-भिन्न किस्मों की सिफारिश की गई है। किसान को आवश्यकतानुसार किस्म का चुनाव करना चाहिए।

- **सिंचाई:** बसंत एवं ग्रीष्मकालीन की सिंचाई नहरी क्षेत्रों में पलेवा के बाद करें। पहली सिंचाई बिजाई के 20 से 25 दिन बाद और उसके पश्चात आवश्यकता अनुसार 10-15 दिनों के अंतर पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

राइजोबियम के टीके से बीज का उपचार

- प्रत्येक दलहनी फसल के लिए अलग राइजोबियम का टीका होता है। इसके पश्चात राइजोबियम का पाउडर/द्रव्य बीजों पर डालकर अच्छी तरह से मिलाकर बीज को छांव में सुखाएं।
- **खेत की तैयारी:** दो-तीन बार जुताई करनी चाहिए और खेत को समतल बना लेना चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद सुहागा अवश्य लगाएं। ये दोनों ही बातें खेत में नमी बनाए रखने में सहायक रहती हैं और उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।
- **बीज की मात्रा:** बीज की मात्रा बीज के आकार एवं बिजाई की दशा/समय पर निर्भर करती है। मोटे आकार के बीज वाली किस्मों में बीज की मात्रा अधिक होती है। खरीफ में 6-8 किग्रा.

प्रति एकड़, बसंत/ग्रीष्मकालीन मूंग 8-10 किग्रा. प्रति एकड़।

- **खाद एवं उर्वरक:** मिट्टी की जांच अवश्य करवा लेनी चाहिए, जिसमें हमें भूमि में उपलब्ध नाइट्रोजन, फासफोरस, पोटाश एवं अन्य पौष्टिक तत्त्वों की सही मात्रा का पता लग जाए। नाइट्रोजन की मात्रा माफी कम चाहिए और फास्फोरस अधिक मात्रा में चाहिए। नाइट्रोजन एवं फास्फोरस बिजाई के समय डाल देनी चाहिए नाइट्रोजन यूरिया के रूप में और फास्फोरस सुपर फास्फेट के रूप में डाली जा सकती है।

एहतियात: मूंग में पीला मोजाइक का पौधा दिखते ही उखाड़कर जमीन में दबा दें

रोग उपचार: हमेशा रोग रोधी किस्मों का प्रयोग करें। तीन वर्ष का फसल चक्र उपनाएं। गर्मियों में गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें। जड़ गलन बिमारी से बचाने के लिए बीज उपचारित करें। मूंग में पीला मोजाइक का पौधा दिखते ही उखाड़कर जमीन में दबा दें। यह रोग सफेद मक्खी से फैलता है।

- **निराई-गुड़ाई:** खरपतवार नियंत्रण के लिए यह प्रक्रिया आवश्यक है। इससे खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ नमी का भी संरक्षण होता है और जड़ों के पास हवा की मात्रा बढ़ती है। 2 निराई-गुड़ाई बिजाई के 20-25 दिन तथा 35-40 दिन बाद करनी आवश्यक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	20.03.25	6	3

दैनिक भास्कर

गन्ने की बिजाई के 40 दिन बाद लगाएं पहला पानी

हिसार | गन्ने की बिजाई के लगभग 40 दिन बाद पहला पानी लगाएं। बत्तर आने पर गुड़ाई करें। यदि बिजाई के समय एट्राजीन नहीं डाल पाएं हों तो पहली सिंचाई के बाद गुड़ाई करके 1.6 किग्रा. एट्राजीन-50 प्रति एकड़ की दर से 200-250 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। इससे गन्ना फसल पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का नियंत्रण करने के लिए 1 किलोग्राम 2, 4-डी (80 प्रतिशत सोडियम नमक) 250 लीटर पानी में बिजाई के 7-8 सप्ताह बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें। यदि फसल में मोथा घास डीला की समस्या हो तो घास उगने पर 2, 4-डी ईस्टर का 400 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। यदि मोथा घास दोबारा उग जाए तो दवाई की इसी मात्रा का फसल में छिड़काव करें। 2, 4-डी मोथा घास को ऊपर से ही नष्ट करती है। मोथा घास डीला की रोकथाम के लिए सैम्प्रा (75 प्रतिशत हैलोसल्फ्युरान) का 36 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के 35-45 दिन बाद (पहली सिंचाई के 2-3 दिन बाद) जब मोथा घास 3-5 दिन की हो तब फ्लैट फैन नोजर से छिड़काव करें।